बायो-डीज़ल उत्पादन बढ़ाने में हासिल की सफलता

- यूपीईएस और रूस के एक्सपर्ट्स ने तकनीक विकसित की

भास्कर समाचार सेवा

देहरादून। यूपीईएस के तीन शोधकर्ताओं ने रूस के बायोएनर्जी एक्सपर्ट्स के साथ मिलकर जटरोफा (रतनजोत) के पौधे से बायोडीज़ल तैयार करने की एक उन्नत तकनीक विकसित की है। इस शोध के अंतर्गत आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग की मदद ली गई है जो श्रम संबंधी खर्चों को घटाने के साथ-साथ बायोईंधन की क्वालिटी भी बेहतर बनाएगी।

यूपीईएस स्कूल ऑफ कंप्यूटर साइंस के अभिरूप खन्ना तथा यूपीईएस स्कूल ऑफ एडवांस्ड इंजीनियरिंग की डॉ सपना जैन तथा डॉ भावना लांबा ने मिलकर एक ऐसी विधि विकसित की है जो एआई और मशीन लर्निंग एल्गॉरिदम की मदद से बायोडीज़ल की प्रॉपर्टीज का पूर्वानुमान लगाकर बायोडीज़ल की उपज तथा क्वालिटी में सुधार ला सकती है।

यूपीईएस तथा अन्य ग्लोबल संस्थानों, जैसे डॉन स्टेट टैक्निकल यूनीवर्सिटी एवं फेडरल साइंटिफिक एग्रोइंजीनियरिंग सेंटर वीआईएम, रूस द्वारा सस्टेनेबल एनर्जी सॉल्यूशंस की तलाश के लिए इस उल्लेखनीय अंतर्विषयक शोधकार्य को व्यापक मान्यता मिली है। चूंकि बायोडीज़ल उत्पादन के लिए जटरोफा (रतनजोत) प्रमुख अखाद्य तिलहन है, इस शोध के अंतर्गत ईंधन की क्वालिटी पर जोर दिया गया जिसने ईंधन की मात्रा का पूर्वानुमान करने के साथ-साथ श्रम लागत घटाने में भी सहायता दी। नई दिल्ली में हाल में आयोजितजी-20 सम्मेलन के दौरान, भारत के नेतृत्व ने एक समूह–ग्लोबल बायोफ्यूएल्स एलायंस का गठन किया है। इस समूह का मिशन विभिन्न देशों को एकजुट कर सस्टेनेबल विकलपों को बढ़ावा देना और बायो ईंधन के प्रयोग को प्रोत्साहित करना है।